

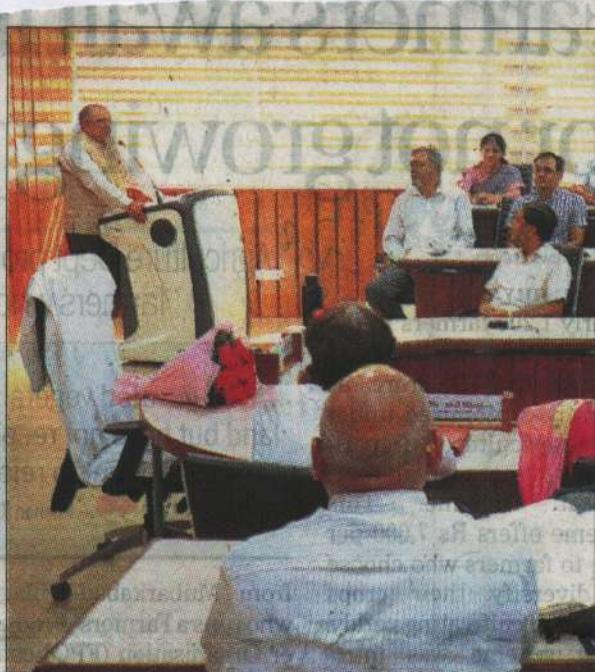


चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	24-07-24	02	7-8

The Tribune

VOICE OF THE PEOPLE



REFRESHER COURSE ON RESEARCH

Hisar: A refresher course on 'research management' is being conducted at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU). The teaching faculty of the HAU and Lala Lajpat Rai University of Veterinary and Animal Sciences (LUVAS) are participating in this three-week refresher course being organised by the directorate of human resource management of the university. While inaugurating the course, Vice-Chancellor Professor BR Kamboj urged scientists to make every possible effort to prioritise research. He said research must be prioritised even for small landholding farmers to increase production at lesser costs. He urged all the participants to submit at least one project during the training in mutual coordination. He expressed hope regarding the refresher course playing an important role in providing agricultural scientists new techniques, and solutions.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भाष्टकृ	24-07-24	03	2-6

भास्कर खास • एचएयू द्वारा गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर किए जा रहे हर संभव प्रयास : प्रो. काम्बोज एचएयू टीम ने 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे, कपास में गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के विवि कर रहे काम

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण के लिए एक विविध कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बीआर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विवि के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना



हक्कि में गुलाबी सुंडी से रोकथाम को लेकर आयोजित अधिकारियों की मीटिंग को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज

कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विश्वविद्यालय की टीम द्वारा विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। उन्होंने

संयुक्त निदेशक कृषि कपास डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाल्हा ने किया। इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अतुल ढींगड़ा, डॉ. शिवराज पुंडीर, डॉ. संदीप, डॉ. सोमवीर निष्ठल, डॉ. मिनाक्षी जाटाण, डॉ. शिवानी मन्धानिया, डॉ. दीपक कम्बोज कीट प्रबंधन संबंधी सलाह

नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की नियानी हेतु दो फैरोमॉन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिंडे बनने की अवस्था में 20 टिंडे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें फाइकर गुलाबी सुंडी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुंडी प्रैड प्रति ट्रेप तीन रातों में या पाच से 10% फूल या टिंडा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉस 50 इसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालाफॉस 25 इसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फलोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण १५	24-07-24	०२	२-५

सर्वे में गुलाबी सुंडी का प्रकोप मिला गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर किए जा रहे प्रयास : कुलपति

जगरण संगददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्ट्राइक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया। मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में हक्कवि टीम की तरफ से 40 गांव के सर्वे को भी रखा गया। इसमें कुछ जगह पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप मिला है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय,



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कार्यशाला में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए • पीअरीउरे

कीट प्रबंधन संबंधी सलाह नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमान ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं या सापाहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिप्पणी की अवस्था में 20 टिप्पणी प्रति एकड़ के हिसाब से लोडकर, उन्हें फाइकर गुलाबी सुंडी हेतु निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुंडी प्रोड प्रति ट्रैप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिप्पणी ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें।

प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डा.

बीमारी संबंधी परामर्श

जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डाइजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें। टिप्पणी गलन के प्रबंधन के लिए कापर आक्सीक्लोरोइड की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं

वर्षा के बाद पानी की निकासी का प्रबंध करें। पहले खाद नहीं डाली तो निराई गुडाई के साथ एक बैंग प्रति एकड़ की बिजाई करें। डीएपी पहले डाल चुके हैं तो आधा कट्टा यूरिया प्रति एकड़ डालें।

करमल सिंह मलिक ने कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डा. आरपी सिंहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया।



**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय**

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दृष्टि - श्रुति	24-07-24	10	2-8

अब तक सुंडी को लेकर 40 से अधिक गांवों में सर्वे कर चुकी है हक्कवि की टीम

गुलाबी सुंडी की दोकथाम को किए जा रहे हर संभव प्रयासः वीसी

हरियाणा विश्वविद्यालय



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मरुस्ती, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फोल्ड स्टाफ को नवान प्रबंधी स्टोक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. कामोज मुख्यमन्त्री थे।

प्रो. कामोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अन्यत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकार को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी समग्रता से अपने कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा रहा है। किसानों को विश्वविद्यालय, प्रदेश का

वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में ग्रामीणिक उत्तरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए।

उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तात्परी के साथ समझता से भपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का

कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईआरआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों की सम्बन्धित रूप से एकठूंट हाफ कार्य करना होगा। डॉ. करमल सिंह महिंद्र का कार्यशाला में आ. हु. सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदानक कृषि (कपास) डॉ. आरपा सिंहग ने कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया।

कपास उत्पादक किसानों की राज्य स्तरीय बैठक कल, राजस्थान में कपास पर सुंडी कर रही हगला हिसार। अधिक भारतीय विभाजन समा वे 25 जुलाई को कपास उत्पादक किसानों की एक राज्य स्तरीय मीटिंग हितार में बुलाई गई है जिसमें बीजारियों ते उत्तराखण्ड कपास की फसल और आगामी अविकल्प पर वर्ती तो जाएगी विस्तार समा के जिला उत्पादक विभाग ने जताया कि ग्राम-कपास की फसल का उत्पादक हरियाणा में छाड़ सरर पर दिया जाता है। ऐसी विभागीय विभाग समा की नीति है कि पूरे कपास उत्पादक बैठक में कृषि विभाजन के विशेषज्ञों की टीम द्वारा करे और अलग-अलग जाति ने गांवों का कलानकर करके किसानों को जावार और इलाके में गांवों का कलानकर बनाकर प्रशिक्षण दिविर द्वारा दिया जाए।

कीट प्रबंधन संबंधी सलाह

बजार में गुलाबी सुंडी की विभाजन के लिए दो फैलोगों द्वाप प्रीट एकड़ लगाए या साराइकिं अस्ताना पर कम से कम 150-200 फूलों का लियेगा करे। इष्ट बजाले की अवस्था में 20 टिप्पे प्रीट एकड़ के फैलोग से तोड़कर, उन्हें प्राइटकर गुलाबी सुंडी द्वारा द्विरेखन कर। 12-15 गुलाबी सुंडी प्राइट प्रीट द्वारा तीन रातों गे पाप ते द्वारा प्रतिदिन फूल या टिप्पा विभाजन के लिए लोटार कीटों को प्रयोग करे। लोटार कीटों गे प्रोटोलोफार्स 50 ईंटों की 3 मिली मीट्री और लोटार कीटों गे कृष्णलोफार्स 25 ईंटों तीव्र 3 से 4 मिली मीट्री प्रति लोटार पाँचों में लियाकर डिप्पकर करे। संपेद याकौर एवं हुगा तेल का क्रोपेट होले पर फैलोगकिं 50 डिव्हूजी 60 ग्राम या लिक्टारपारोप्रेट 50 जोएल को 400 मिली मीट्री प्राइट एकड़ का डिङ्कान करे।

कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पीछे मालिक ने कार्यशाला में आ. हु. सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विभाजन पर विभागीय कार्यालय के साथ समझता से भपना कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि कपास

जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन द्वा. शुभम लालना ने किया। संसाधन प्रबंधन विभाग, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, निदानक द्वा. अतुल दीग्दा, द्वा. शिवराज सिंहा से डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल पुंडीर, डॉ. संदीप, डॉ. समवीर निम्बल, डॉ. निमाक्षी जाटाण, डॉ. शिवारी जुड़े गों एवं उनके निवेश के बारे में बताया।

गहरापूर्ण सत्य कियाएं

बजार के बाद पानी की विभाजन का प्रधान करो। इहले अब बड़ी भाली है तो उब विलेह गुडाई के साथ बजाने प्रति द्वारा लोटार कीटों का लियाकर करे। असर डॉएप्रेट प्राइट लोटार कीटों के बारे में आग बढ़ा द्वारा लियाकर करे।

बीमारी संबंधी परामर्शः जड़ गलन के लिए कार्बन-डाइजम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की पीथों की जड़ों में डालें। टिप्पा गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन-डाइजम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभू 2 उजाला	24-07-24	02	7-8

गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए कर रहे हर संभव प्रयास : कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा व जड़ गलन के निवारण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फैल्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर वैज्ञानिक और कृषि विभाग के अधिकारी सजग हैं। जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसान वैज्ञानिकों की ओर की जाने वाली सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए दो फेरोमान ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं या साप्ताहिक अंतराल

गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा व जड़ गलन को लेकर एचएयू ने 40 गांवों में कराया सर्वे

पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें। टिप्पे बनने की अवस्था में 20 टिप्पे प्रति एकड़ के हिसाब से तोड़कर, उन्हें गुलाबी सुंडी के लिए निरीक्षण करें। 12-15 गुलाबी सुंडी प्रौढ़ प्रति ट्रैप तीन रातों में या पांच से दस प्रतिशत फूल या टिप्पा ग्रसित मिलने पर कीटनाशकों को प्रयोग करें। कीटनाशकों में प्रोफेनोफॉर्म 50 इसी की 3 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी या क्यूनालफॉर्म 25 इसी की 3 से 4 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सफेद मक्खी एवं हरा तेला का प्रकोप होने पर फलोनिकामिड 50 डब्ल्यूजी 60 ग्राम या एफिडोपायरोप्रेन 50 जी/एल की 400 मिली मात्रा प्रति एकड़ का छिड़काव करें। जड़ गलन के प्रबंधन के लिए कार्बन्डजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी को पौधों की जड़ों में डालें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिप्युन	24-07-24	12	3-5

हृषि की टीम ने 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे

दिनांक: 23 जुलाई (ब्रा)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली

सिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए।

उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहांग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत सभाचार	24-07-24	05	2-5

हृषि द्वारा गुलाबी सुंडी की रोकथाम को लेकर किए जा रहे हैं संबंध प्रयासः प्रो. काम्बोज विश्वविद्यालय टीम द्वारा 40 से अधिक गांवों में किया गया सर्वे

हिसार, 23 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मकरखी, ऊबेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फील्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी

अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सस्य क्रियाओं

जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियन्त्रण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया।

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कीट संबंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं। नरमा फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी हेतु दो फेरोमॉन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं या साप्तहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का निरीक्षण करें।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। कपास

की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहाग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से

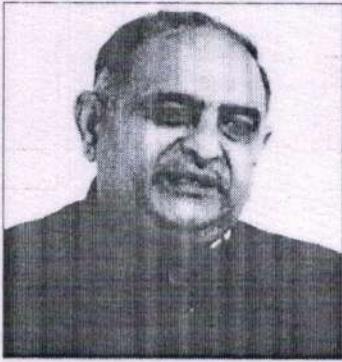


चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	23.07.2024	---	--

गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए टीम ने 40 से अधिक गांवों में किया सर्वे : प्रो.कम्बोज

पल पल न्यूज़: हिसार, 23 जुलाई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुंडी, सफेद मक्खी, उखेड़ा तथा जड़ गलन आदि अनेक कीटों और रोगों की समस्या के निवारण हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि विभाग के अधिकारियों एवं फैल्ड स्टाफ को नवीन एवं स्टीक वैज्ञानिक तरीकों से अवगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आने वाले दो महीने कपास की फसल की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रकोप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांवों में सर्वे किया जा चुका है। किसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली मिफारिशों के अनुसार कपास की फसल में रासायनिक उत्तरकों एवं कीटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली



विभिन्न प्रकार की बीमारियों की रोकथाम को लेकर पंजाब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालमेल के साथ सजगता से अपना कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कीट एवं रोग मुक्त करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, (सीआईसीआर, सिरसा) और कपास से जुड़ी कंपनियों को संयुक्त रूप से एकजुट होकर कार्य करना होगा। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में सर्वे क्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी। संयुक्त निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिहांग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही कपास से जुड़ी परियोजनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जीएस दहिया, केन्द्रीय कपास शोध संस्थान, सिरसा से प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एसके वर्मा, डॉ. अनिल कुमार सैनी तथा डॉ. अनिल ने कपास से जुड़े रोगों एवं उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शुभम लाम्बा ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	23.07.2024	---	--

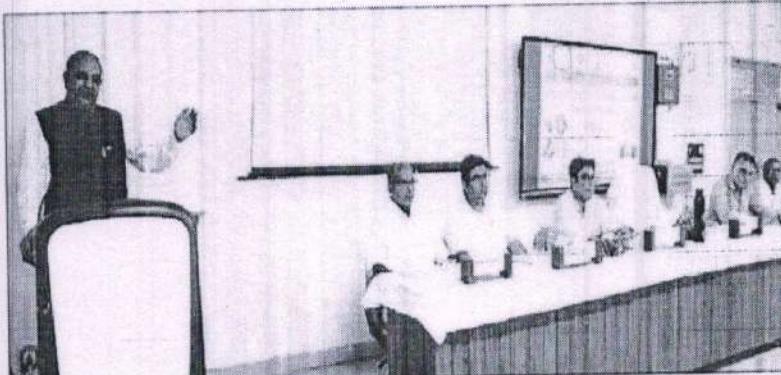
गुलाबी सुडी की रोकथाम को लेकर हर संभव प्रयास कर रहा है हकूमि : प्रो. काम्बोज

हकूमि की टीम 40 से अधिक गांवों में किया सर्व

पांच बजे न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में गुलाबी सुडी सफद मस्तुक, उखेड़ तथा जड़ गलन आदि अन्क काटा और गांव के समस्या के निवापण हुए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि किसान के अधिकारियों एवं फीड स्टक को नवीन एवं स्थीर वैज्ञानिक तरीकों से अलगत करवाया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कल्पनित प्रो. वी. आर. काम्बोज मुख्यालयीय रहे।

प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए बताया कि आन वाले दो महीने कापास की फसल की सूखा के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुडी के प्रकाप को लेकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और कृषि एवं किसान रखन्याने विभाग के अधिकारी माजगांव में अपना कार्य कर रहे हैं। इसे काढ़ी में विश्वविद्यालय की टीम द्वारा जिले के 40 से अधिक गांव में मर्यादित किया जा चका है। विसानों को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली मिकारियों के अनुसार कपास की फसल में गम्भीरक उद्धरके एवं कोटनाशकों को प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि कपास फसल में आने वाली विभिन्न फ्रक्टर को बीमारियों



की रोकथाम को संकर पंजब, हरियाणा व राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय आपसी तालिमें के साथ मजबूता से अपना कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि कपास उत्पादन को बढ़ाने और कोट एवं रोग प्रबल करने के लिए विश्वविद्यालय, प्रदेश का कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय कपास शाखा भवन में विभाग के वार में करता। ज्ञानक्रम में अनुवालिकी एवं लैप एडवनस विभाग के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. वृहत्या, केन्द्रीय कपास शाखा भवन, मिरमार में प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एम्से वर्मा, डॉ. अनिल कुमार मिर्जा तथा ह. अमित ने कपास में जुड़ी गांव कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमस उनके नियंत्रण के बारे में जानकारी दी।

सिंह मलिक ने कार्यशाला में आए हुए सभी

अधिकारियों का स्वागत किया और कपास फसल में मर्यादित कियाओं की विस्तार से जानकारी दी।

संस्कृत निदेशक कृषि (कपास) डॉ. आरपी सिंहग ने कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा जारी किया गया फसल से जुड़ी विभिन्न विभागों के बारे में करता। ज्ञानक्रम में अनुवालिकी एवं लैप एडवनस विभाग के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. वृहत्या, केन्द्रीय कपास शाखा भवन, मिरमार में प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एम्से वर्मा, डॉ. अनिल कुमार मिर्जा तथा ह. अमित ने कपास में जुड़ी गांव कार्य करना होगा।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमस

किया। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कपास फसल के लिए कोट संबंधी महत्वपूर्ण मुद्राव दिए गए हैं।

कोट प्रबंधन संबंधी सरलह :-

नरमा फसल में गुलाबी सुडी की विगराही हेतु दो फोरामिन ट्रैप प्रैट एकड़ लागाएं या मासाहिक अंतराल पर कम से कम 150-200 फूलों का लिंगांग करें। ट्रैप वर्षन की अवधि में 20 ट्रैप डेरी प्रैट एकड़ के लिंगांग से नोडकर उन्हें फोड़कर गुलाबी सुडी प्रैट प्रैट ट्रैप तीन गतों में द्वितीय तीव्रता द्वारा दूर कर दें। अप्रैल तीव्रता द्वारा दूर कर दें।

इस अवधि पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अनुल हीमद्दु, डॉ. शिवाजी पुरी, डॉ. संदेप, डॉ. मामती नियम, डॉ. मिमांसा जाटा, डॉ. दीपक कम्बोज उपसंचाल

करों कोटनाशकों में प्रोफेसनल्स 50 इमो की-3 मिली घाज़ी प्रैट लैटर परी या क्यूबलाल्ट्राम 25 इमो की 3 से 4 मिली घाज़ी प्रैट लैटर परी में मिनाकर छिड़काव करें। सफेद मरुड़ी एवं हरा तेला का प्रकाप होने पर फ्लॉनिकमिड 50 डब्ल्यूजी 60 घाम या एफिलोपायरोज़ 50 जी/प्रैट को 400 मिली घाज़ी प्रैट एकड़ का छिड़काव करें।

बीमारी संबंधी परामर्श :-

जहां गलन के प्रबंधन के लिए कावर्डिजिम की 2 घाम घाज़ी प्रैट लैटर परी को पैदाओं की जड़ों में डालें। टिप्पांगलन के प्रबंधन के लिए कॉम्प अस्ट्रेंकलोगिड की 2 घाम घाज़ी प्रैट लैटर परी की दो से छिड़काव करें।

महत्वपूर्ण सम्य कियाएं :-

बासात के बाद विभाग के नियमों का प्रबंध करें। पहले शाद नहीं डालें हैं तो अब नियोड़ गडाई के साथ एक घैंग प्रैट एकड़ को शीघ्र डालें। अगर डीप्पों पर लागू चुके हैं तो आग कटाएं यूंचा प्रैट एकड़ डालें।

इस अवधि पर मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. अनुल हीमद्दु, डॉ. शिवाजी पुरी, डॉ. संदेप, डॉ. मामती नियम, डॉ. मिमांसा जाटा, डॉ. दीपक कम्बोज उपसंचाल